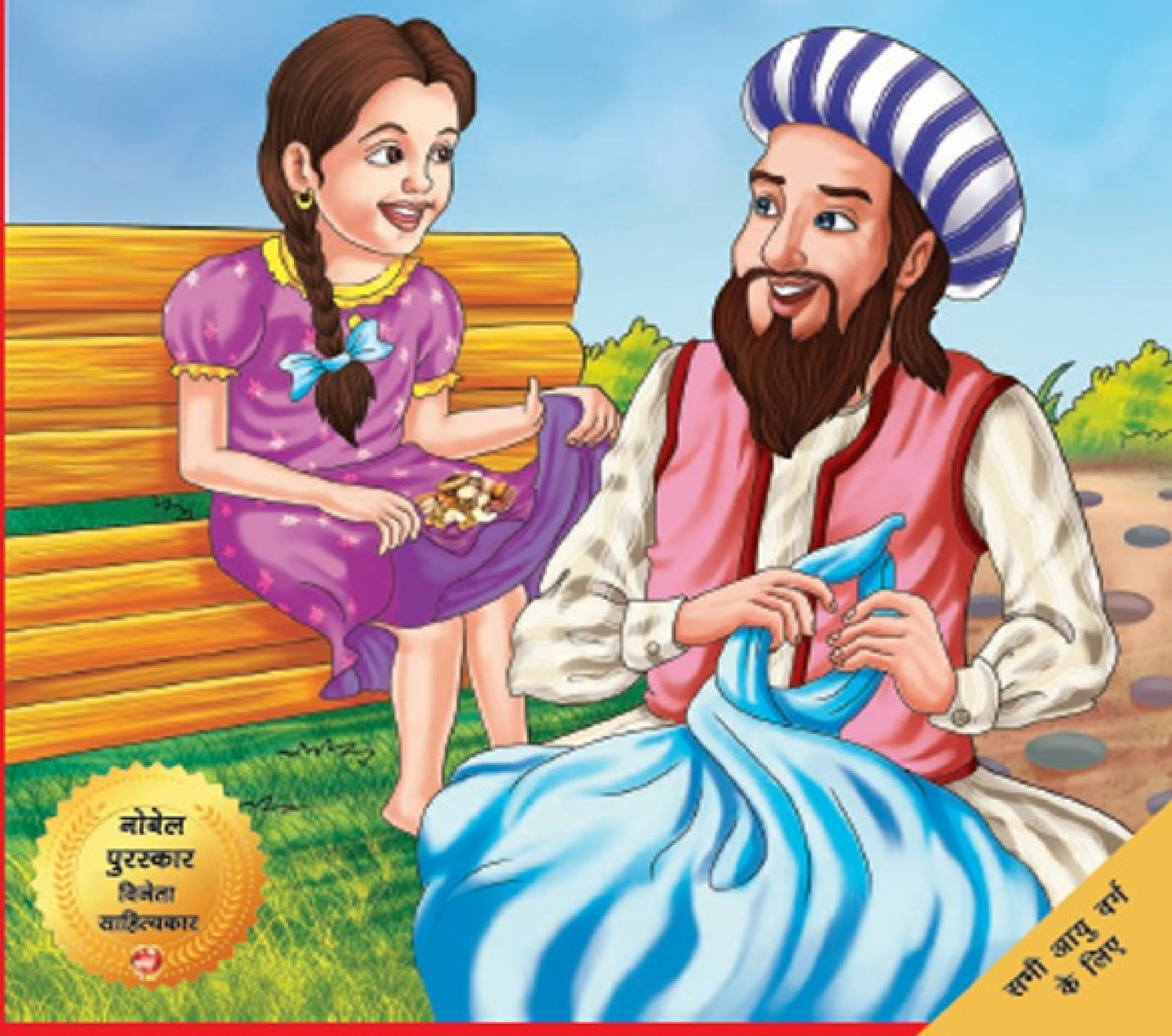
सर्वश्रेष्ठ बाल साहित्य

काबुलीवाला

रवीन्द्रनाथ टैगोर





काबुलीवाला

सहसा मेरी पाँच वर्ष की लाड़ली बेटी मिनी 'अगड़म-बगड़म' का खेल छोड़ कर खिड़की की तरफ भागी और ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी, "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले!"

मैं इस समय उपन्यास लिख रहा था। सत्रहवाँ अध्याय चल रहा था। नायक, नायिका को लेकर अँधेरी रात में जेल की ऊँची खिड़की से नीचे बहती नदी के जल में कूद रहा था। घटना वहीं रुक गई।

सोचने लगा-'मेरी बेटी कितनी चंचल और बातूनी है। अभी कुछ पल पहले वह मेरे पैरों के पास बैठी खेल रही थी कि अचानक उसे यह क्या सुझी!' मिनी के इस काम से मुझे

अचरज तो नहीं हुआ पर परेशानी ज़रूर महसूस हुई।



मैंने सोचा, “बस, अब पीठ पर झोली लिए काबुलीवाला आ खड़ा होगा। मेरा सत्रहवाँ अध्याय अब पूरा नहीं हो सकता।”

ज्यों ही काबुलीवाले ने हँस कर मुँह फेरा और मेरे घर की ओर आने लगा, त्यों ही वह घर के अन्दर भाग आई। उसके मन में एक झूठा विश्वास था कि काबुलीवाला अपनी झोली में उसी की तरह के दो-चार चुराये गए बच्चे छिपाए रहता है। इधर काबुलीवाला आकर मुस्कराता हुआ मुझे सलाम करके खड़ा हो गया। आदमी को घर पर बुला कर कुछ न खरीदना अच्छा नहीं लगता, इसलिए उससे कुछ खरीदा। दो-चार बातें हुईं। पता चला, उसका नाम रहमान था।

अंत में उठ कर चलते समय उसने पूछा, “बाबू, तुम्हारी लड़की कहाँ गई?”

मैंने मिनी के डर को पूरी तरह खत्म करने के लिए उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे सट कर काबुलीवाले के चेहरे और झोली की ओर शक भरी नज़र से देखती हुई खड़ी रही। काबुली उसे झोली के अंदर से कुछ सूखे मेवे निकाल कर देने लगा पर वह लेने को किसी तरह राज़ी नहीं हुई। दुगने डर से मेरे घुटने से सट कर रह गई।

कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे किसी काम से घर से बाहर जाते समय देखा कि मेरी नन्ही बेटी दरवाज़े के पास बेंच के ऊपर बैठी अपनी बे-सिर-पैर की बातें कर रही है। काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा मुस्कराता हुआ सुन रहा है। वह बीच-बीच में मिनी की बातों पर अपनी राय भी बताता जाता है। मिनी को अपने पाँच साल के जीवन में पिता के अलावा ऐसा धीरज रख कर उसकी बातों को सुननेवाला कभी नहीं मिला था। मैंने यह भी देखा कि उसका छोटा आँचल बादाम-किशमिश से भरा था। मैंने काबुलीवाले से कहा, “उसे यह सब क्यों दिया? अब फिर मत देना।” मैंने जेब से एक अठन्नी निकाल कर उसको दे दी। काबुलीवाले ने अठन्नी मुझसे लेकर अपने झोले में रख ली।



घर लौट कर आया तो देखा कि उस अठन्नी को लेकर पूरा झगड़ा मचा हुआ है। मिनी की माँ उससे पूछ रही थी, “तुझे यह अठन्नी कहाँ मिली?”

मिनी कह रही थी, “काबुलीवाले ने दी। मैंने माँगी नहीं थी। उसने खुद दे दी।” मैंने मिनी की माँ को समझाया और मिनी को बाहर ले गया। पता चला कि इस दौरान काबुलीवाले ने लगभग रोज़ आकर मिनी को पिस्ता-बादाम देकर उसके नन्हे दिल का विश्वास पा लिया है। वे आपस में दोस्त बन गए हैं। दोनों में कुछ बँधी हुई बातें और हँसी-मज़ाक चलते। काबुली रहमान को देखते ही मेरी बेटी हँसते हुए पूछती, “काबुलीवाले! तुम्हारी झोली में क्या है?”

रहमान हँसते हुए उत्तर देता, “हाथी।”

मतलब, उसकी झोली में हाथी है। इस बात से दोनों खूब हँसते। उन दोनों की सरल हँसी देख कर मुझे भी अच्छा लगता।



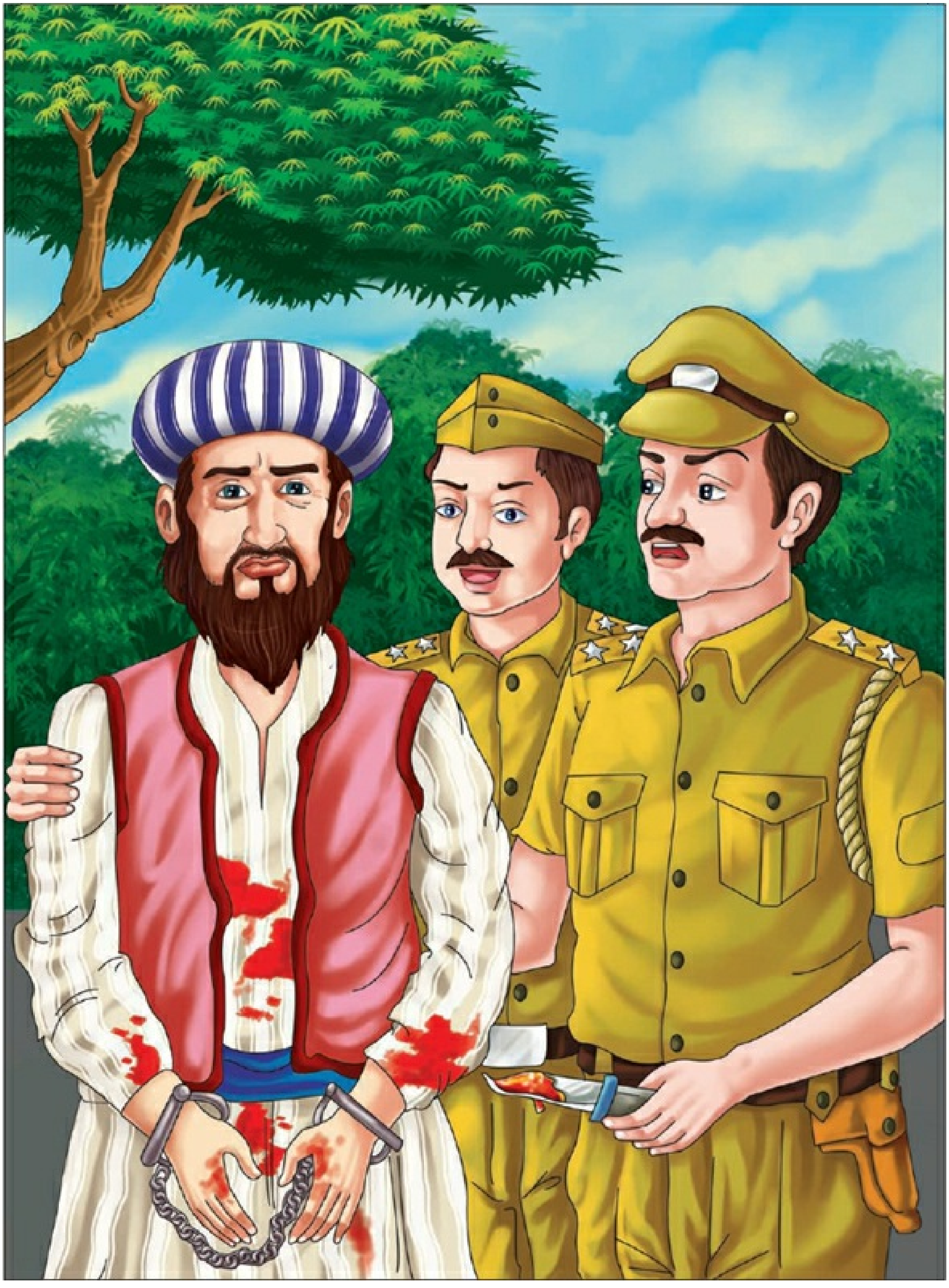
उनमें एक और हँसी भरी बात चलती थी। रहमान मिनी से कहता, “मिनी, तुम क्या ससुराल कभी नहीं जाओगी?”

‘ससुराल’ का मतलब नहीं समझने के कारण मिनी उलट कर पूछती, “तुम ससुराल जाओगे?”

रहमान ससुर के लिए खूब मोटा घूँसा तान कर कहता, “मैं ससुर को मारूँगा।”

सुनकर मिनी ‘ससुर’ नाम के किसी अनजाने जीव की पिटी-पिटाई हालत के बारे में सोच कर खूब हँसती।

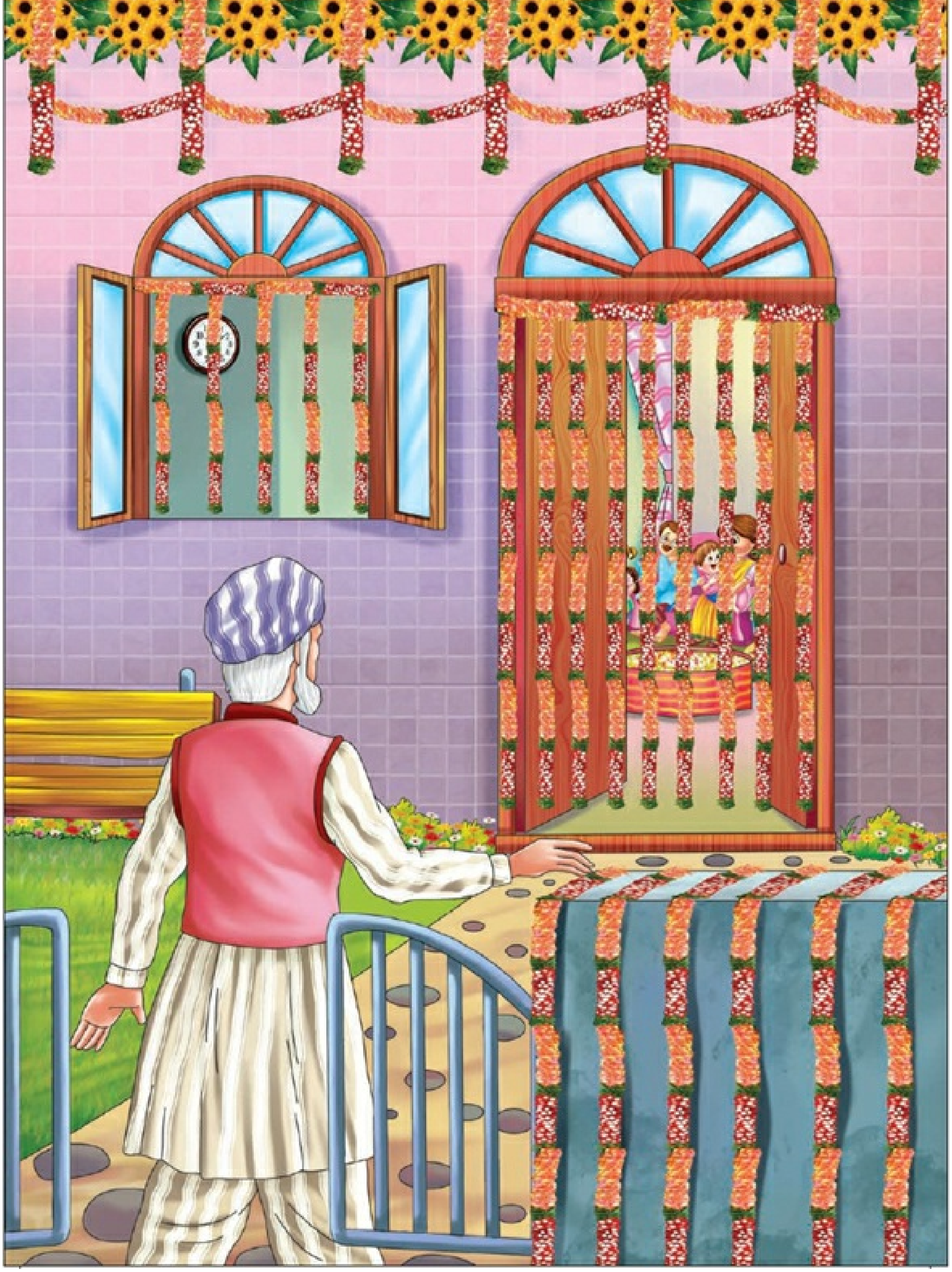
मुझमें देश-विदेश घूमने की इच्छा है लेकिन अपने कमरे से बाहर निकलते ही घबराहट होने लगती है। इसलिए सुबह अपने कमरे में मेज़ के सामने बैठ कर इस काबुली के साथ बातचीत करने से बाहर घूमने का काफी काम हो जाता है। वह टूटी-फूटी बांग्ला में अपने देश की बातें कहता है और उसकी तस्वीरें मेरी आँखों के सामने आ जाती हैं। लेकिन मिनी की माँ बहुत शक्की स्वभाव की महिला थी। रहमान काबुलीवाले पर उन्हें भरोसा नहीं था। उन्होंने मुझसे बार-बार उस पर खास तौर से नज़र रखने के लिए प्रार्थना की। उनके शक को हँस कर उड़ा देने पर उन्होंने कई सवाल किए—“क्या कभी किसी के बच्चे चोरी नहीं जाते? एक लंबे-चौड़े काबुली के लिए एक छोटे-से बच्चे को चुरा ले जाना क्या बिल्कुल नामुमकिन है?” मुझे मानना पड़ा कि ये बातें नामुमकिन नहीं हैं लेकिन मैं इस कारण भलेमानस रहमान को घर आने से मना नहीं कर सकता था।



हर वर्ष माघ के महीने के बीचों-बीच रहमान अपने देश चला जाता। इस समय वह अपना सारा उधार रुपया वसूल करने में जुटा रहता। लेकिन फिर भी एक बार वह मिनी से ज़रूर मिल जाता। जिस दिन सुबह के समय नहीं मिलता तो शाम को आ पहुँचता। कभी-कभी अँधेरे कमरे में उसे बैठा देख कर सचमुच भय-सा लगता। लेकिन जब उन दोनों की भोली-भाली बातें सुनता तो हृदय प्रसन्नता से भर उठता।

एक दिन सवेरे मैं अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था। तभी सड़क पर बड़े ज़ोर का हल्ला सुनाई पड़ा। आँख उठाई तो देखा, दो पहरेवाले अपने रहमान को बाँधे लिए आ रहे हैं—उसके पीछे तमाशबीन लड़कों की टोली चली आ रही है। रहमान के शरीर और कपड़ों पर खून के दाग हैं। एक पहरेवाले के हाथ में खून से सना छुरा है। मैंने बाहर आकर पहरेवालों को रोक कर पूछा, “मामला क्या है?”

मालूम हुआ कि हमारे एक पड़ोसी ने रामपुरी चादर के लिए रहमान से कुछ रुपया उधार लिया था। उसने झूठ बोल कर रुपया देने से इंकार कर दिया, और इसी बात को लेकर कहा-सुनी करते-करते रहमान ने उसके छुरा भोंक दिया। रहमान उस झूठे आदमी को तरह-तरह की गालियाँ दे रहा था। तभी “काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले!” पुकारती हुई मिनी घर से बाहर निकल आई।



पलक मारते रहमान का चेहरा आनन्द से खिल उठा। उसके कंधे पर आज झोली नहीं थी, इसलिए उसके बारे में कुछ पूछा नहीं जा सकता था। मिनी ने छूटते ही उससे पूछा, “तुम ससुराल जाओगे?”

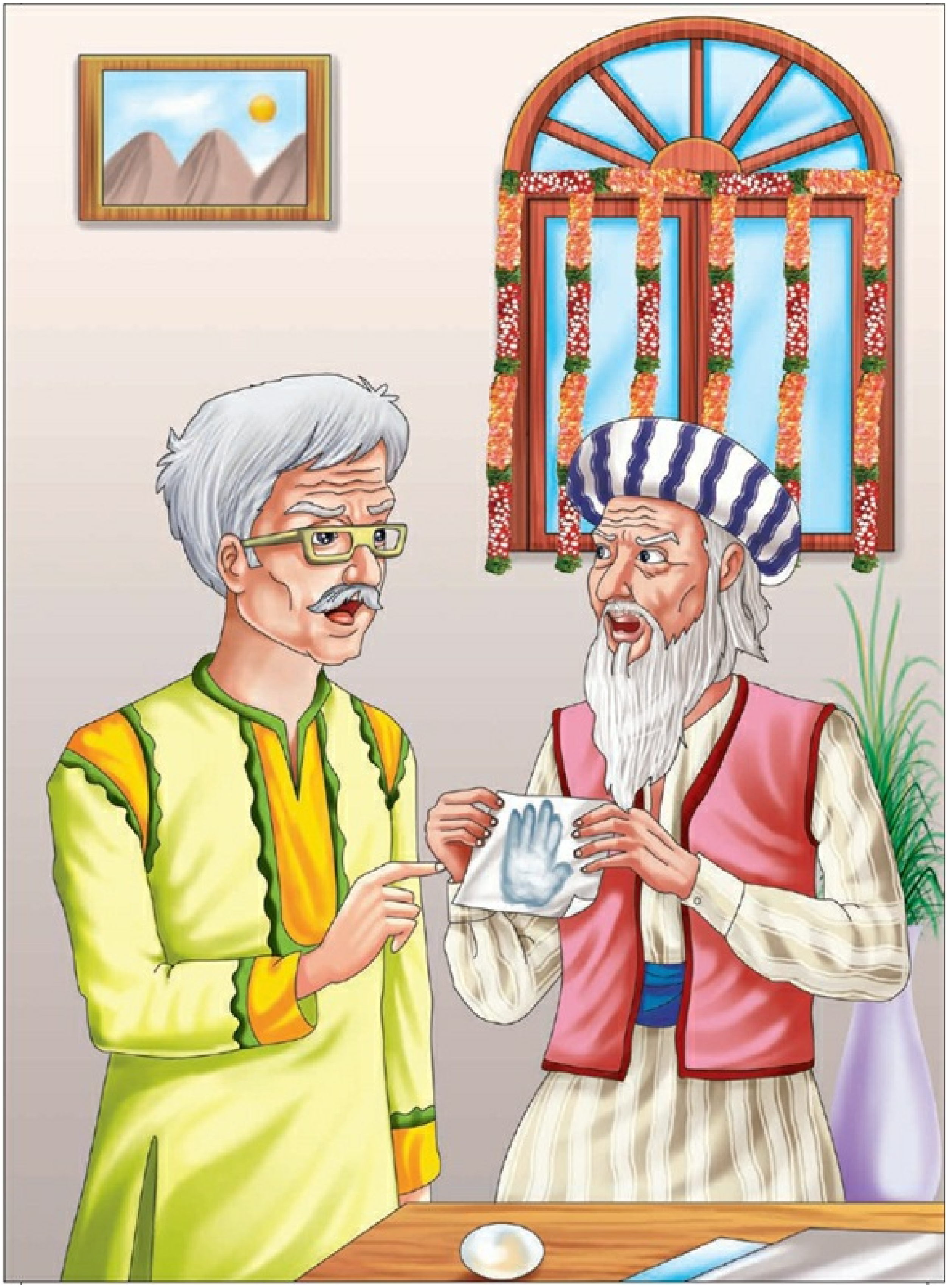
रहमान ने हँस कर कहा, “वहीं जा रहा हूँ।”

मिनी को उसका जवाब हँसी भरा नहीं लगा। वह हाथ दिखा कर बोला, “ससुर को मारता, पर क्या करूँ हाथ बँधे हैं।”

छुरा मारने के अपराध में रहमान को कई वर्ष की जेल हो गई। मैं उसकी बात करीब-करीब भूल गया। मिनी भी उसे जल्दी भूल गई। धीरे-धीरे उसके नए मित्र बनते गए। उम्र बढ़ने के साथ एक-एक करके सखियाँ जुटने लगीं। मेरे साथ भी अब वह पहले जैसी बातचीत नहीं करती। मैंने तो उसके साथ एक प्रकार की कुट्टी कर ली थी।

बहुत सुहावनी सुबह थी। आज मेरे घर में शहनाई बज उठी थी। उसके स्वर मेरे हृदय को अन्दर से रुला रहे थे। मेरी लाड़ली बेटी मुझसे विदा होने जा रही थी। आज मेरी मिनी का विवाह था।

सवेरे से ही विवाह की तैयारियाँ हो रही थीं। मैं बाहर के कमरे में बैठा हिसाब देख रहा था, तभी रहमान आकर सलाम करके खड़ा हो गया।



मैं पहले उसे पहचान नहीं सका। उसके पास न वह झोली थी, न उसके वे लम्बे बाल। शरीर भी कमज़ोर हो गया था। आखिर उसकी हँसी देख कर उसे पहचाना।

मैंने कहा, “क्यों रे रहमान, कब छूटा?”

उसने कहा, “कल शाम को जेल से छूटा हूँ।”

बात सुन कर कानों में जैसे खटका हुआ। आज के शुभ दिन यह आदमी यहाँ से चला जाता तो अच्छा होता। मैंने उससे कहा, “आज हमारे घर में एक काम है। मुझे बहुत से काम करने हैं, आज तुम जाओ।”

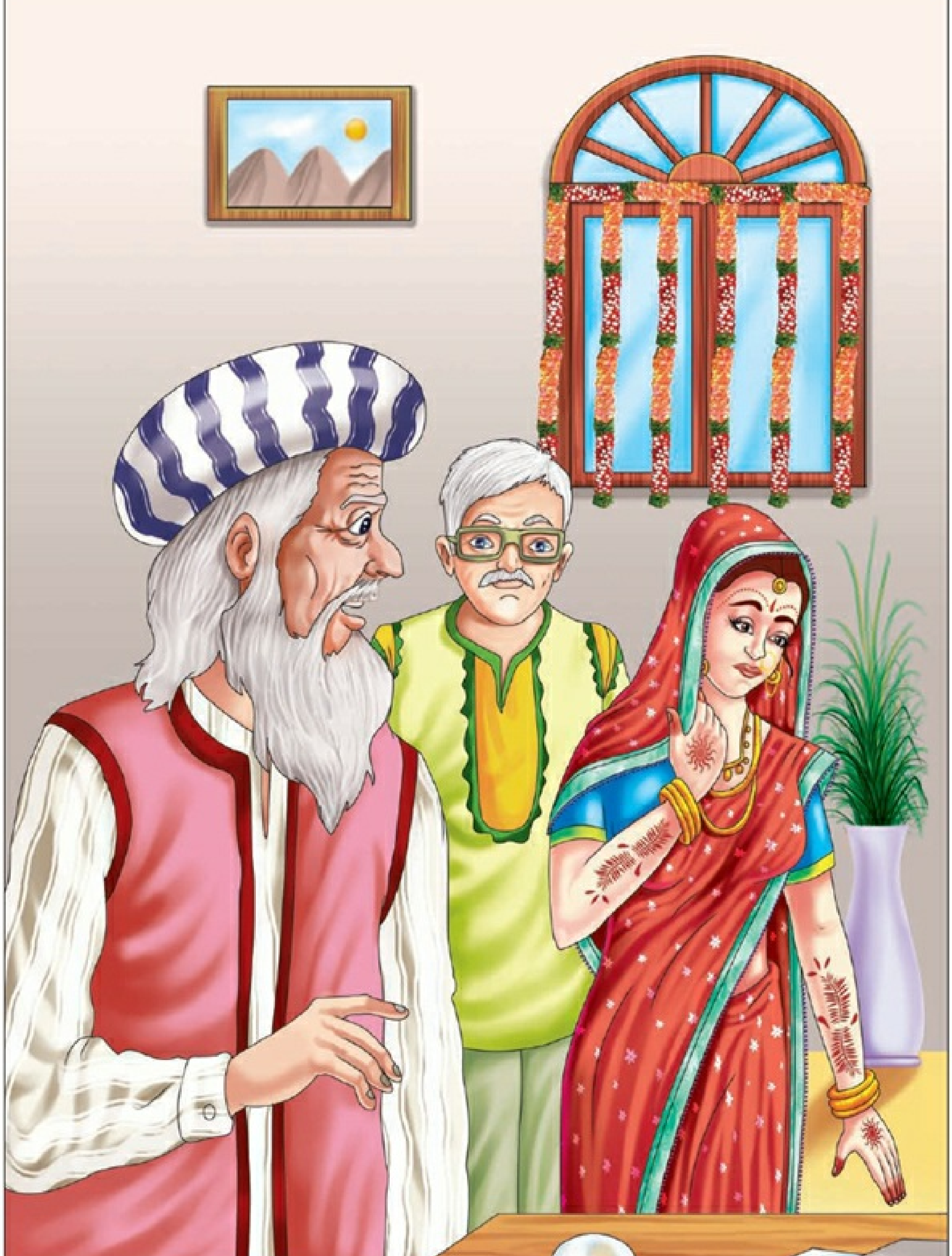
बात सुनते ही वह चल दिया और दरवाज़े के पास पहुँच कर बोला, “क्या एक बार मुन्नी को नहीं देख सकूँगा?”

शायद उसे विश्वास था, मिनी अब भी वैसी ही होगी। नन्ही-सी बच्ची, जो पहले की तरह ही ‘काबुलीवाले’ कहती हुई दौड़ी आएगी, बच्चों जैसी हँसी भरी बातें करेगी। वह पहले की तरह उसके लिए किसी से माँग-जाँच कर एक डिब्बा अंगूर और किशमिश-बादाम लाया था।

मैंने कहा, “आज घर में काम है। वह किसी से मिल नहीं सकेगी।”

वह दुःखी मन से ‘सलाम बाबू’ कह कर दरवाज़े के बाहर चला गया।

मुझे अपने मन में न जाने कैसा एक दर्द महसूस हुआ। सोचा, उसे वापस बुलवा लूँ। तभी देखा, वह खुद लौटा आ रहा है।



पास आकर बोला, “ये अंगूर और थोड़े-से किशमिश-बादाम मुन्नी के लिए लाया था, दे दीजिएगा।”

उन्हें लेकर जब मैं दाम देने लगा तो वह मेरा हाथ पकड़ कर बोला, “मुझे पैसा मत दीजिए। बाबू, जिस तरह तुम्हारी एक लड़की है, उसी तरह मेरे देश में मेरी भी एक लड़की है। मैं उसी का चेहरा याद करके तुम्हारी मुन्नी के लिए थोड़ी मेवा लेकर आया हूं, सौदा करने नहीं।”

यह कहते हुए उसने अपने कुर्ते में कहीं छाती के पास से मैले काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला और बहुत सावधानी से उसकी तह खोल कर मेरी टेबिल पर बिछा दिया।

देखा, काग़ज़ पर किसी नन्हे हाथ की छाप थी। फोटो नहीं, रंगों से बना चित्र नहीं, प्यारी बिटिया के हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगा कर काग़ज़ के ऊपर उसकी छाप ले ली गई थी। अपनी प्यारी बिटिया के हाथ की इसी यादगार को सीने से लगाए रहमान कलकत्ते की सड़कों पर मेवा बेचने आता, मानो उस सुंदर, कोमल नन्ही बच्ची के हाथ की छुअन भर उसके हृदय में अमृत की धारा बहाती रहती।

देखकर मेरी आँखें छलछला आई। उस समय मैंने समझा कि जो वह है, वही मैं हूँ। वह भी पिता है, मैं भी पिता हूँ। मैंने उसी समय मिनी को भीतर से बुलवाया। शादी की लाल साड़ी पहने, माथे पर चंदन लगाए बहू वेश में मिनी लज्जा से मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसको देख कर काबुलीवाला सकपका गया। अपनी पुरानी बातचीत नहीं जमा पाया। अंत में हँस कर बोला, “मुन्नी, तू ससुराल जाएगी?”

रहमान का प्रश्त सुन कर लज्जा से लाल होकर मिनी मुँह फेर कर खड़ी हो गई। मुझे काबुलीवाले और मिनी की पहली भेंट याद हो आई और मैं कुछ दुःखी हो उठा।

मिनी के चले जाने पर गहरी साँस लेकर रहमान ज़मीन पर बैठ गया। अचानक उसकी समझ में साफ आ गया, इस बीच उसकी बेटी भी इसी तरह बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उस पर क्या बीती होगी, यह भी भला कोई जानता है! उसका चेहरा दुःख और चिन्ता से भर उठा।

मैंने एक नोट निकाल कर उसे देते हुए कहा, “रहमान, तुम अपनी लड़की के पास अपने देश लौट जाओ। तुम्हारा मिलन-सुख मेरी मिनी का कल्याण करे।”



सूखे मेवे बेचने वाले एक बूढ़े अफ़गानी और एक नन्ही बच्ची के बीच किस तरह किसी बाप-बेटी जैसा पवित्र प्रेम विकसित हुआ है, रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी इस अनुपम कहानी में यही चित्रित किया है।

इस कहानी की गिनती बच्चों के लिए लिखी गई महान पुस्तकों में की जाती है। दुनिया भर में पढ़ी और सराही गई इस महान कहानी को हिन्दी और बंगला भाषा में कई बार सिनेमा के पर्दे पर उतारा गया और हर बार दर्शक उसे देखने को उमड़ पड़े।

लेखक के विषय में :

रवीन्द्रनाथ टैगोर को सन् 1913 में नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया। यह विश्वविख्यात पुरस्कार पाने वाले वह पहले गैर-यूरोपीय साहित्यकार थे। आधुनिक भारत के सर्वप्रमुख रचनाकार के रूप में उनकी ख्याति निर्विवाद है। उनके रचे हुए दो गीत दो देशों में राष्ट्रगीत की मान्यता पा चुके हैं- भारत में *'जन गण मन'* और बंगला देश में *'आमार सोनार बांग्ला'*।